

प्राचीन प्रस्तर एवं हड्डियों से नरिमति औज़ार

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

एक हालिया अध्ययन से पता चला है कि प्राचीन पूर्वजों ने 1.5 मिलियन वर्ष पूर्व हड्डी के औज़ारों का उपयोग करते थे, जो कि अनुमान से लगभग 1 मिलियन वर्ष पूर्व की बात थी, जिसने इस विचार को चुनौती दी कि औज़ार बनाना मनुष्यों के लिये अद्वितीय था।

- औज़ार नरिमाण की उत्पत्ति: सबसे प्राचीन प्रस्तर के औज़ार (3.3 मिलियन वर्ष) और हड्डी के औज़ार (1.5 मिलियन वर्ष) से यह संकेत मिलता है कि औज़ारों का प्रयोग होमो से भी पूर्व का है और संभवतः पूर्व के मानवों द्वारा इसका प्रयोग किया जाता था।
 - यह तर्क दिया जाता है कि औज़ार नरिमाण के लिये वैचारिक विचार की आवश्यकता होती है और यह केवल मनुष्यों के लिये ही है।
- मानव विकास का जीवाश्म: वर्ष 1974 में खोजा गया, 3.2 मिलियन वर्ष पुराना मानव पूर्वज लूसी ने विकास में महत्वपूर्ण भूमिका नभाई थी, संभवतः उसने औज़ारों के लिये अपने हाथों का उपयोग किया था।

भारत के मानव इतिहास में प्रस्तर के औज़ार:

अवधि	औज़ार और प्रौद्योगिकी	प्रमुख स्थल
नमिन पुरापाषाण काल (600,000 – 150,000 ईसा पूर्व)	हाथ की कुल्हाड़ी, क्लीवर, चॉपर (काटने, छीलने के लिये)	बोरी (महाराष्ट्र), सोन और सोहन घाटियाँ (पंजाब), डीडवाना (राजस्थान), भीमबेटका (मध्य प्रदेश)
मध्य पुरापाषाण काल (150,000 – 35,000 ईसा पूर्व)	फ्लेक्स, ब्लेड, पॉइंट, बोरर, स्क्रैपर (छोटे प्रस्तर के टुकड़ों से)	नर्मदा घाटी, बेलन घाटी (उत्तर प्रदेश), तुंगभद्रा क्षेत्र (दक्षिण भारत)
उच्च पुरापाषाण काल (35,000 – 10,000 ईसा पूर्व)	ब्लेड, ब्यूरनि, स्क्रैपर (अधिक परिष्कृत और विविध)	भीमबेटका (मध्य प्रदेश), कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात रेत के टीले
मध्यपाषाण युग (9000 – 4000 ईसा पूर्व)	माइक्रोलिथ (छोटे प्रस्तर के औज़ार, जिन्हें प्रायः मशरति औज़ार के रूप में उपयोग किया जाता है)	बागोर (राजस्थान), आदमगढ़ (मध्य प्रदेश), कृष्णा नदी के दक्षिण में
नवपाषाण युग (7000 – 5500 ईसा पूर्व)	आयताकार कुल्हाड़ियाँ, पॉलिश प्रस्तर की कुल्हाड़ियाँ	मेहरगढ़ (बलूचिस्तान), बुरज़होम (कश्मीर), गुफकराल (कश्मीर), सेनुवार (बिहार)

और पढ़ें: [पाषाण युग में लकड़ी की कलाकृतियाँ](#)